

Padma Shri



SMT. BASANTI DEVI

Smt. Basanti Devi is social worker. She is widely known for her efforts for women empowerment and environment conservation in the Kumaon region of Uttarakhand.

2. Born on 30th November 1958 at village Digra of Kanalichhina Tehsil of District Pithoragarh in Uttarakhand Smt. Basanti after passing the Intermediate examination, left her native village and joined Kasturba Mahila Utthan Mandal, Laxmi Ashram Kausani, Almora for social reforms. She has contributed in the various fields of Social Reforms viz. forest conservation, women empowerment etc. She formed women's groups to remove social evils prevailing the society. She started a campaign to save the forest through women's groups and also started public awareness to stop domestic violence and atrocities against women.

3. Smt. Basanti formed a group of women from 200 villages in the entire valley from Kausani to Lod to work together to save the river Kosi and struggle against other social evils. She launched the campaign for women's participation in village Panchayats in the year 2008. She also started a campaign for the emancipation of women facing domestic violence and harassment of men. In 2014, she helped 150 women from 51 villages become self-reliant. She became widow at age of 12. Being victim of child marriage, she made efforts to create awareness against child marriage.

4. Smt. Basanti has been honoured with Nari Shakti Puraskar; Devi Award and Femina Women Jury Award for her selfless distinguished social work.

पद्म श्री



श्रीमती बसन्ती देवी

श्रीमती बसन्ती देवी एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं। वह उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में महिला सशक्तीकरण और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अपने प्रयासों के लिए व्यापक रूप से जानी जाती हैं।

2. 30 नवंबर, 1958 को उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले की कनालीछीना तहसील के ग्राम डिगरा में जन्मी श्रीमती बसन्ती ने इंटरमीडिएट की परीक्षा पास करने के बाद, अपने पैतृक गाँव को छोड़ दिया और सामाजिक सुधार के लिए कस्तूरबा महिला उत्थान मंडल, लक्ष्मी आश्रम कौसानी, अल्मोड़ा के साथ जुड़ गईं। उन्होंने सामाजिक सुधारों के विभिन्न क्षेत्रों जैसे वन संरक्षण, महिला सशक्तीकरण आदि में योगदान दिया है। उन्होंने समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए महिला समूहों का गठन किया। उन्होंने महिला समूहों के माध्यम से वनों को बचाने के लिए अभियान शुरू किया और घरेलू हिंसा तथा महिलाओं के प्रति अत्याचार को रोकने के लिए जन जागरूकता भी शुरू की।

3. श्रीमती बसन्ती ने कोसी नदी के संरक्षण और अन्य सामाजिक बुराइयों के प्रति संघर्ष करने के लिए कौसानी से लोद तक, सम्पूर्ण घाटी के 200 गांवों की महिलाओं का एक विशाल समूह बनाया। उन्होंने वर्ष 2008 में गांव की पंचायतों में महिलाओं की भागीदारी के लिए अभियान शुरू किया। उन्होंने घरेलू हिंसा और पुरुष उत्पीड़न का सामना करने वाली महिलाओं की मुक्ति के लिए अभियान भी शुरू किया। वर्ष 2014 में, उन्होंने 51 गांवों की 150 महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में उनकी सहायता की। वह 12 साल की आयु में ही विधवा हो गई थीं। बाल विवाह की भुक्तभोगी होने के कारण, उन्होंने बाल विवाह के विरुद्ध जागरूकता पैदा करने का प्रयास किया।

4. श्रीमती बसन्ती को उनके निःस्वार्थ विशिष्ट सामाजिक कार्यों के लिए नारी शक्ति पुरस्कार; देवी पुरस्कार और फेमिना महिला जूरी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है।